विचार बिन्दु

आशा प्रयत्नशील मनुष्य का साथ कभी नहीं छोड़ती। –गेटे

कोविड-19 में आयुर्वेद को मुख्य चिकित्सा के रूप में प्रयुक्त करने का समय आ गया है

कोविड-19 के कारण विश्व भर में 151 मिलियन से अधिक लोग बीमार हो चुके हैं और 1 मई, 2021की सुबह तक 3.17 मिलियन मौतें हो चुकी हैं। भारत में इसी अवधि के दौरान 18.8 मिलियन मामले और 0.20 मिलियन मौतें हुई हैं। दुनिया भर में अनुसंधान और 1,39,514 शोधपत्रों और 2294 मेटा-एनालिसिस व सिस्टेमेटिक रिव्यू के प्रकाशन के बावजूद स्वास्थ्य देखभाल की किसी भी प्रणाली में कोविड-19 के खिलाफ सर्वमान्य, प्रभावी, नैदानिक रूप से सिद्ध और प्रमाण-आधारित दवा या शत-प्रतिशत अचूक टीकाकरण उपलब्ध नहीं हो पाया है। सब में कोई न कोई किन्तु-परन्तु लगा हुआ है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति की कोविड-19 के उपचार में व्यापक रणनीतिक असफलता और प्रमाण-विहीनता ने आयुर्वेद की ओर देखने के लिये विवश कर दिया है। प्रश्न यह है कि क्या आयुर्वेद भारत को इस संकट से उबार सकता है? आइये उत्तर देखते हैं।

सबसे पहले क्लिनिकल ट्रायल्स और पायलट स्टडीज को देखते हैं। अभी तक कुल मिलाकर तीन उच्चकोटि के क्लिनिकल ट्रायल्स प्रकाशित हो चुके हैं। कोरोनावायरस संक्रमण में आयुर्वेदिक दवाओं के प्रभाव को समझने के लिये कोविड-19 के लिये समर्पित पुणे के एक अस्पताल में कुल 99 पॉजिटिव रोगियों में एक क्लिनिकल अध्ययन किया गया। इन 99 रोगियों में से 60 रोगियों को मानक प्रोटोकॉल से साथ आयुर्वेद भी दिया गया, जबकि 39 रोगियों को केवल मानक प्रोटोकॉल से उपचारित किया गया। अध्ययन का उद्देश्य यह देखना था कि कोविड-19 के रोगियों में मानक प्रोटोकॉल के साथ आयुर्वेदिक चिकित्सा का कोई लाभ होता है या नहीं। इस प्रोस्पेक्टिव, ओपन लेबल, तुलनात्मक क्लिनिकल अध्ययन में हल्के से मध्यम लक्षणों वाले रोगियों में स्टैंडर्ड प्रोटोकॉल के साथ आयुर्वेदिक चिकित्सा को अतिरिक्त रूप से दिया गया। तुलनात्मक प्रभाव को समझने के लिये नियंत्रण-समूह (कण्ट्रोल-ग्रुप) को केवल देखभाल का मानक प्रोटोकॉल ही दिया गया। मानक देखभाल के साथ साथ आयुर्वेद की चिकित्सा प्राप्त करने वाले रोगियों में बीमारी से तुलनात्मक रूप तेजी से रिकवरी हुई। उपचार-समूह के रोगियों को नियंत्रण-समूह के लोगों की तुलना में लक्षणों में कमी और अस्पताल में रहने की अवधि में बहुत कमी पायी गयी। सांस की तकलीफ से पीड़ित रोगियों का प्रतिशत आयुर्वेद सहित उपचार-समूह में 1, 3 और 7 दिन में 53 प्रतिशत से गिरकर 16 प्रतिशत और 1.6 प्रतिशत रह गया, जबकि नियंत्रण-समूह में क्रमशः 46 प्रतिशत से 38 प्रतिशत और 28 प्रतिशत ही नीचे आया। स्वाद-हानि को कोविड-19 का एक महत्वपूर्ण लक्षण माना जाता है। उपचार-समूह में रोगियों का प्रतिशत 75 प्रतिशत नीचे आकर 25 व 3.3 रह गया, जबकि नियंत्रण-समूह में यह गिरावट 46 प्रतिशत से 36 व 26 प्रतिशत थी। यह पेपर निर्विवाद रूप से सिद्ध करता है कि मॉडर्न-बायोमेडिसिन की मदद के लिये आयुर्वेद चिकित्सा को खड़ा करते ही रोगियों को भारी लाभ होता है (देखें, पंकज वंजरखेड़कर एवं अन्य, जर्नल ऑफ़ आयुर्वेदा एंड इंटीग्रेटिव मेडिसिन, 19 अक्टूबर 2020)।

दूसरा प्रकाशित क्लिनिकल ट्रायल लखनऊ में हुआ। कोविड-19 के लिये समर्पित अस्पताल में एक रैंडोमाइज़्ड, ओपन लेबल, समानांतर समूह अध्ययन माइल्ड लक्षणों वाले रोगियों के प्रबंधन में आयुर्वेदिक हस्तक्षेप की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने के लिये हुआ। यह 10 दिन का अध्ययन था जिसमें कुल 120 पॉजिटिव मरीजों को शामिल कर तीन समूहों में बांटा गया। सभी रोगियों का आरटी-पीसीआर क्रमशः 5वें, 7वें और 10वें दिन किया गया। आयुर्वेद चिकित्सा के परिणामस्वरूप कोविड-19 मरीजों के लक्षणों में सुधार, अग्नि में वृद्धि और संक्रमण से मुक्ति देखी गई। आयुर्वेदिक दवाओं पर रखे गये रोगियों में लक्षणों में सुधार व वायरल नियंत्रण पाया गया। अध्ययन में मिले आशाजनक परिणाम आयुर्वेद द्वाराकोविड-19 रोगियों के प्रबंधन में उपयोगी हैं। आयुर्वेद का उपयोग सामुदायिक प्रसार को सीमित करने और बीमारी को अधिक भयावह स्थिति तक जाने से रोकने के लिये किया जा सकता है (देखें, आदिल रईस एवं अन्य, जर्नल ऑफ़ आयुर्वेदा एंड इंटीठोटिव मेडिसिन, 2 फरवरी 2021)।

कोविड-19 संक्रमण के दूसरे दौर का सबसे खतरनाक रूप अब दृष्टिगोचर हो रहा है। यह मानवता के हित में है कि कोविड-19 की चिकित्सा में आयुर्वेद को एक प्रभावी और मुख्य चिकित्सा पद्धति के रूप में प्रयुक्त किया जाये। जरूरत पड़ने पर बायो-मेडिकल पद्धति का मानक प्रोटोकॉल वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में प्रयुक्त किया जाना चाहिये।

तीसरा क्लिनिकल ट्रायल जयपुर में पूरा किया गया है। यह क्लिनिकल ट्रायल 100 मरीजों पर हुआ और यह पाया गया कि तीसरे दिन जहाँ आयुर्वेद उपचार ग्रुप में 71.1 प्रतिशत मरीज ठीक हुये वहीं प्लेसीबो समूह में और 50 प्रतिशत रोगी ठीक हुये। आयुर्वेद उपचार समूह में 7 दिन के अन्दर 100 प्रतिशत रोगी ठीक हुये, जबकि प्लेसीबो समूह में यह 60 प्रतिशत था। उपचार समूह में संक्रमण से उबरने के जोखिम में 40 प्रतिशत कमी पायी गयी। (देखें, गनपत देवपुरा एवं अन्य, फाइटोमेडिसिन, 84: आर्ट. 153494, 2021)।

चौथा क्लिनिकल ट्रायल आयुष-64 नामक औषधि पर है। महामारी की वर्तमान लहर के बीच भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के सहयोग से हुये आयुष-64 नामक औषधि पर अनेक स्थानों पर हुये क्लिनिकल ट्रायल्स से पाया गया है कि यह औषधि हल्के और मध्यम लक्षणों की तीव्रता वाले कोविड-19 संक्रमण के रोगियों के लिये आशा की किरण हो सकती है। देश के प्रतिष्ठित शोध संस्थानों के वैज्ञानिकों ने पाया है कि आयुष-64, जो केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस), आयुष मंत्रालय द्वारा विकसित एक पॉली हर्बल योग है, हल्के, हल्के और मध्यम तीव्रता के लक्षणों वाले रोगियों के उपचार में उपयोगी है। इसे मानक देखभाल के साथ एक सहायक के रूप में दिया जा सकता है। यह दवा शुरू में मलेरिया के लिये 1980 में विकसित की गई थी और अब कोविड-19 के लिये भी उपयोगी पायी गई है। आयुष-64 पर इस क्लिनिकल ट्रायल का शोधपत्र तो अभी प्रकाशनाधीन है परन्तु अब यह मानक आयुष प्रोटोकॉल का हिस्सा है।

इस औषधि पर रैंडमाइज्ड, ओपन लेबल, समानांतर प्रभावकारिता, सक्रिय नियंत्रण, मल्टी-सेंटर एक्सप्लोरेटरी ड्रग ट्रायल हुये हैं। इसमें आयुष-64 की सुरक्षा को समझने व सहायक उपचार विकसित करने के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि ना केवल यह औषधि पूर्ण सुरक्षित है, बल्कि जिन मरीजों में मानक देखभाल के साथ इलाज हेतु आयुष-64 को प्रयुक्त किया गया उनमें अन्य की तुलना में अधिक तेज गति से लाभ हुआ। केवल मानक देखभाल वाले रोगियों की तुलना में आयुष-64 समूह के रोगी एक सप्ताह जल्दी ठीक हुये। उनके क्लिनिकल पैरामीटर्स और जीवन-गुणवत्ता में महत्वपूर्ण बदलाव देखे गये। आयुष-64 पर एक अन्य पायलट अध्ययन चौधरी ब्रह्मप्रकाश आयुर्वेद हॉस्पिटल नई दिल्ली में हुआ। इस अध्ययन में 40 मरीज शामिल थे। पाया गया कि 14 दिन के भीतर 86.1 प्रतिशत मरीज कोविड-19 नेगेटिव हो गये। आयुष-64 पर ही एक और अध्ययन राजकीय मेडिकल कॉलेज नागपुर में 60 मरीजों के बीच हुआ। परिणाम बताते हैं कि आयुर्वेद ऐड-ऑन हस्तक्षेप समूह के सभी प्रतिभागियों (100 प्रतिशत) में पूर्ण रिकवरी हो गयी जबकि नियंत्रण समूह में यह केवल 85.2 प्रतिशत ही थी। ऐड-ऑन हस्तक्षेप समूह में कोविड-19 से जुड़े तमाम पचड़े जैसे बुखार, खांसी, सांस की तकलीफ, एक्सपेक्टरेशन और सीने में दर्द आदि 15वें दिन सभी प्रतिभागियों में पूरी तरह सुलझ गये। इसके अलावा आईएल-6, डी-डाईमर और टीएनएफ-अल्फा आदि में भी समुचित सुधार पाया गया। असल में आयुष-64 पर और भी कई स्थानों पर अध्ययन हुये और सभी में कमोवेश यही धनात्मक परिणाम प्राप्त हुये। गुरु गोविंद सिंह राजकीय अस्पताल, जामनगर, पंडित खुशीलाल शर्मा शासकीय आयुर्वेद कॉलेज एवं संस्थान, भोपाल, सेंट्रल काउंसिल ऑफ़ रिसर्च इन अयुर्वेदिक साइंसेज के सहयोग से श्री धन्वंतरि आयुर्वेदिक कॉलेज, चंडीगढ़, आयुर्वेद और यूनानी तिब्बिया कॉलेज, करोल बाग, नई दिल्ली आदि में हुये क्लिनिकल ट्रायल भी आयुर्वेद की कोविड-19 के विरुद्ध प्रभाविता और सुरक्षा सिद्ध करते हैं।

उपरोक्त चार क्लिनिकल ट्रायल्स के साथ ही 6 उच्चकोटि की क्लिनिकल केस स्टडीज भी आयुर्वेद के अगुआ शोध जर्नल में प्रकाशित हुई हैं। इन सबके निष्कर्ष भी आयुर्वेद को मजबूती से कोविड-19 के विरुद्ध प्रभावी सिद्ध करते हैं। उदाहरण के लिये हाल ही में प्रकाशित क्लिनिकल केस-स्टडी के अनुसार कोल्डकैल व त्विषाअमृत कोविड-19 के उपचार में पूर्ण प्रभावी पायी गयी हैं (देखें, संजीव रस्तोगी, रंजना रस्तोगी, अतुल खरबंदा, जर्नल ऑफ़ आयुर्वेदा एंड इंटीठोटिव मेडिसिन, 25 फरवरी, 2021)। इसके साथ ही आगे प्रकाशनार्थ भेजी गयी केस स्टडीज, जो बड़ी संख्या में वैद्यों के चिकित्सकीय अनुभवजन्य प्रमाण (प्रैक्टिस-बेस्ड-एविडेंस) पर आधारित हैं, के अनुसार कोविड-19 की चिकित्सा में आयुर्वेद की औषधियां प्रभावी पायी गयी हैं। विख्यात आयुर्वेदाचार्य डॉ. वी.बी. मिश्रा एवं अन्य वैद्यों के प्रैक्टिस-बेस्ड-एविडेंस से ज्ञात होता है कि आयुर्वेद बचाव और प्रबंध दोनों में ही उपयोगी है। वस्तुतः 23 अप्रैल 2020 को आयुर्वेद के माध्यम से कोविड-19 विषय प्रकाशित हमारा एक पेपर अब अपने विषय में विश्व भर में सबसे ज्यादा चर्चित और सर्वाधिक-संदर्भित पेपर है (देखें,संजीव रस्तोगी, दीप नारायण पाण्डेय व राम हर्ष सिंह, जर्नल ऑफ़ आयुर्वेदा एंड इंटीग्रेटिव मेडिसिन, 23 अप्रैल 2020)। आयुर्वेद से कोविड-19 की चिकित्सा पर शोधपत्रों का प्रकाशन अभी तो प्रारम्भ हुआ है। बड़ी संख्या में हुये क्लिनिकल ट्रायल्स के परिणाम श्रेष्ठ जर्नल्स में प्रकाशन के माध्यम से अब प्रकाश में आ रहे हैं।

कोविड-19 संक्रमण के दूसरे दौर का सबसे खतरनाक रूप अब दृष्टिगोचर हो रहा है। यह मानवता के हित में है कि कोविड-19 की चिकित्सा में आयुर्वेद को एक प्रभावी और मुख्य चिकित्सा पद्धति के रूप में प्रयुक्त किया जाये। जरूरत पड़ने पर बायो-मेडिकल पद्धति का मानक प्रोटोकॉल वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में प्रयुक्त किया जाना चाहिये।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

कहीं दो-तीन किमी. दूर पैदल चलकर तो कहीं गंदे पानी से गला तर करने की मजबूरी

बांसवाड़ा के घाटा क्षेत्र में पीने के पानी के लिए मचा त्राहिमाम

बांसवाड़ा, (निसं)। जनता के दम पर नेता चुने जाते हैं वार्डपंच से लेकर पीएम तक बनाकर गरीब जनता देश की बागडौर जनप्रतिनिधियों के हाथ में सौंपती है ताकि दुःख और विपदा के समय उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

ऐसे में बांसवाडा जनजाति बाहुल्य क्षेत्र के नॉन कमांड सबसे ज्यादा खेडा धरती घाटा क्षेत्र की विभिन्न पंचायतों के विभिन्न कस्बों, गांवों और ढाणी मजरों में जनजाति बाहुल्य क्षेत्र में निवास करने वाले आमजन पीने के पानी के लिए परेशान होकर अपना और मवेशियों का गला तर कहीं गंदे पानी से तो कहीं दो से तीन किमी दूर पैदल चलकर सिर पर पानी उठाकर कर रहे हैं। जहां अमुमन फरवरी माह के अंतिम सप्ताह में पेयजल स्त्रोत जवाब देने के बाद हालत भयावह है। जहां बरतानिया पंचायत प्रशासन से लेकर जिम्मेदार पीएचडी विभाग सहित जनप्रतिनिधियों और शासन प्रशासन का ध्यान कोरोना महामारी में भी पीने के पानी के इंतजामात करने पर नहीं गया है तथा त्राहिमाम मचा हुआ है।

जल ही जीवन है ... इसके लिए नॉन कमांड क्षेत्र में दो-दो किमी. दूर से मासूम जीवन तलाशने को हो रहे विवश।

यहां बता दें कि क्षेत्र की बावडी निनामा पंचायत के कालाखेत गांव के ग्रामीण गांव से दो किमी दूर गवर्नर गांव और तालाब के पेटे में खोले गड्ढो से पीने के पानी का बंदोबस्त कर रहे है। गांव के जागरूक अध्यापक और समाजसेवी रघुनाथ कटारा ने बताया कि पेजयल की समस्या की लिखित जानकारी और टैंकर शुरू करने की मांग उपखंड में दे चुके है साथ ही जनप्रतिनिधियों को भी अवगत करा चुके है लेकिन आज दिन तक नॉन कमांड ईलाके में पानी के टैंकर शुरू करने के आदेश नहीं हुए है। मोहकमपुरा सातलिया क्षेत्र के जनपद प्रतिनिधि सादर भाई भूरिया ने बताया कि कुशलगढ कस्बा कोरोना वायरस के पहले चरण में रेड जोन और हॉटस्पाट रह चुका है वर्तमान में हर पंचायत क्षेत्र में संक्रमित आने लगे है। पंचायतों की ओर से न तो सेनेटाईजर का छिडकाव किया गया है न ही नियमानुसार एडवायजरी का पालन हो रहा है। वहीं क्षेत्र की जनता पीने के पानी के लिए भटक-भटक कर जुगाड कर रही है। इन लोगों ने शीघ्रताशीघ्र नॉन कमांड गांवों में पीने के पानी के टैंकर शुरू करने की मांग की है।

- **जनप्रतिनिधि और शासन भी अब तक बना मूकदर्शक**
- **यहां अमूमन फरवरी माह के अंतिम सप्ताह में पेयजल स्त्रोत जवाब देने के बाद हालत भयावह है**

रोजा तोड़कर अब्दुल कयूम ने प्लाज्मा डोनेट किया

कोटा, (निसं)। शहर के पाटनपोल निवासी 52 वर्षीय मोहम्मद सलीम कोरोना पीड़ित होने से झालावाड़ रोड स्थित निजी अस्पताल में भर्ती हैं। शुक्रवार रात अचानक उनकी तबीयत गंभीर हो गई। डॉक्टर ने उन्हें तत्काल एक यूनिट प्लाज्मा देने की आवश्यकता बताई। परिजन शहर में प्लाज्मा डोनर के लिये पूछताछ करते रहे। किसी से जानकारी मिलने पर उन्होंने टीम रक्तदाता समूह कोटा के जुबेर खान को मदद के लिये कॉल किया। रक्तदाता समूह कोटा के जुबेर खान ने परिजनों को प्लाज्मा देने का भरोसा दिलाया। उन्होंने अपने रक्तवीर साथी अब्दुल कय्यूम से तुरंत ब्लड बैंक पहुंचने को कहा। रमजान के माह में अब्दुल रोजे से थे लेकिन उनमें किसी रोगी की जान बचाने का जज्बा था। अब्दुल ने बिना कुछ सोच विचार किये प्लाज्मा डोनेट करने का निर्णय लिया और कृष्णा ब्लड बैंक जाकर प्लाज्मा देकर रोगी की जान बचाई। डोनेशन के समय एक अन्य निजी अस्पताल में भर्ती बुजुर्ग कोरोना रोगी राजेन्द्र कोठारी के परिजनों ने ब्लड बैंक में ही रक्तदाता जुबेर खान से मदद मांगी। उन्होंने रोगी की जरूरत को तत्काल पूरा कर विश्वास दिलाया कि आगे भी रक्त संबंधी कोई समस्या आये तो उन्हें कॉल करके बुला सकते हैं।

अवैध बजरी परिवहन व हरे पेड़ों की कटाई के खिलाफ डीएसटी टीम की कार्रवाई

डूंगरपुर, (निसं)। वर्तमान में भारत ही नहीं बल्कि पूरा विश्व कोरोना महामारी में ऑक्सीजन से जूझ रहा है। लोग ऑक्सीजन की कमी से दम तोड़ रहे हैं हर तरफ त्राहिमाम मचा हुआ है। इस विपदा की घड़ी में भी कुछ प्रकृति के दुश्मन हरे पेडों की कटाई कर पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने से बाज नहीं आ रहे हैं और वनस्पति को बर्बाद करने में तुले हुए है।

जिला पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी के निर्देशन में अवैध कारोबार के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत जिला स्पेशल टीम ने अवैध बजरी परिवहन व हरे पेडों की कटाई के खिलाफ कार्यवाही की तथा एक आरोपी को गिरफ्तार कर संसाधन जप्त किए। मुखबिर की सूचना के आधार पर आसपुर निठाउवा मार्ग पर एक अवैध रूप से बजरी परिवहन करते डंपर को डिटेन किया तथा पूछताच में संतोषप्रद जवाब नहीं दे पाया। जिस पर पुलिस ने डंपर को पुलिस थाना साबला को सुपुर्द किया गया।

डीएसटी टीम ने कार्यवाही कर लकड़ी बरामद की।

- **अवैध बजरी परिवहन में एक आरोपी को गिरफ्तार कर संसाधन जब्त किए**
- **एक ट्रक लकड़ी से भरा हुआ तथा एक बड़ी क्रेन को डिटेन किया**

हरे पेड़ों की कटाई के खिलाफ की बड़ी कार्यवाही :- इसी तरह जिला स्पेशल टीम को मध्य रात्रि करीब 2 बजे के आसपास मुखबिर की सूचना मिली कि पुलिस थाना निठाउवा सर्कल के सागोट गांव के आसपास से रात के अंधेरे में अवैध रूप से हरे पेडों कटाई कर ट्रकों में क्रेनों से लादकर गुजरात ले जाने की तैयारी की जा रही है।

सूचना पर टीम ने सागोट गांव पहुंचकर एक ट्रक लकड़ी से भरा हुआ तथा एक बड़ी क्रेन को डिटेन किया गया व आसपास बड़ी मात्रा में हरे पेडो की कटाई कर भण्डारण किया हुआ पाया गया। मौके से क्रेन चालक केशा पिता मेगजी कलासुआ निवासी मूंगाणा जिला प्रतापगढ़, ट्रक चालक राकेश पिता लक्ष्मण कटारा निवासी कतारापाडा कुंवा को डिटेन कर पुलिस थाना निठाउवा को सुपुर्द किया गया। कार्यवाही के दौरान हेडकांस्टेबल नवीन कुमार, कानिस्टेबल महावीर, मुकेश, यशपाल, पंकज मौजूद रहे।

पीपीई किट पहन कर बेटी ने अंतिम संस्कार किया

भीलवाड़ा के श्मशान घाट में अंतिम संस्कार करती बेटी।

भीलवाड़ा, (निसं)। कोरोना संक्रमण के डर से रिश्तों में दूरियां आ गईं और श्मशान में कई परिजनों ने मुखाग्नि देना भी बंद किया।

वहीं भीलवाड़ा में एक बेटी अपने प्रिंसिपल पिता की मौत पर श्मसान पहुंच गई। पीपीई किट पहनकर वहां अंतिम संस्कार में मौजूद रही और मुखाग्नि भी दी। शहर के आजादनगर निवासी कोमल बाबू त्रिपाठी (59) का कोरोना से शुक्रवार को निधन हो गया था। त्रिपाठी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मंगरोप (भीलवाड़ा) में प्रिंसिपल रहे। पिछले लगभग 15 दिन से कोरोना महामारी से जूझते हुए एक निजी अस्पताल में उनका निधन हो गया। उनके एक ही बेटी श्वेता उपाध्याय है। वह विवाहित है। पुत्री श्वेता ने कोरोना गाइड लाइन के अनुसार पीपीई किट पहन कर अपने पिता को श्मशान में आज मुखाग्नि दी।

- **कोरोना ने ली प्रिंसिपल की जान**

रोजी-रोटी के लिये चिलचिलाती धूप में नमक ढोने की मजबूरी

सांभरझील, (निसं)। सांभरझील लवणीय क्षेत्रों के आसपास चिलचिलाती धूप में नमक उत्पादन स्थलों पर आज भी अनेक श्रमिक अपनी पूरी क्षमता के साथ काम में जुटे देखे जा सकते हैं। गर्मी के दिनों में यहां का टेम्प्रेचर काफी बढ़ा हुआ रहता है लेकिन इसके बावजूद अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिये ये लोग इसी प्रकार पूरी शिद्दत के साथ काम करते दिखायी देते हैं।

- **सांभरझील लवणीय क्षेत्रों के आसपास नमक उत्पादन स्थलों पर आज भी अनेक श्रमिक अपनी पूरी क्षमता के साथ काम में जुटे देखे जा सकते हैं**

सांभरझील में धूप में नमक लदान करते श्रमिक।

इन ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य कोई स्थायी रोजगार का साधन उपलब्ध नहीं है ऐसे में इनकी यह मजबूरी इनके जीवन का अभिन्न अंग बन गयी है।

जानकारी करने पर यह मालूम हुआ कि गांवों में कोई रोजगार का साधन नहीं होने के कारण काफी परिवार पलायन कर चुके हैं लेकिन वे हर वर्ष मार्च में वापस अपने गांव आते है और चौमासा रहने तक यहीं पर काम कर अपना व अपने बच्चों का पेट भरते है। ये श्रमिक नमक को ट्रैक्टर-ट्रॉली में लदान करने का काम करते हैं। इन श्रमिकों ने बताया कि इन्हें दिनभर काम करने के बदले जो पारिश्रमिक मिलता है वह पर्याप्त नहीं है लेकिन उनके पास इसके अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है। हालाकि इन श्रमिकों को ठहरने की सुविधा तो मिलती है लेकिन पगार काफी कम होने से वे अपने बच्चों की अनेक जरूरतें पूरी नहीं कर पाते हैं।

राशिफल रविवार 2 मई 2021

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2078, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र प्रातः 8:59 तक, साध्य योग रात्रि 1:47 तक, तैतिल करण सायं 4:42 तक, चन्द्रमा आज दिन 2:46 पर मकर राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मेष, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मिथुन, बुध-वृष, गुरू-कुम्भ, शुक्र-मेष, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग प्रातः 8:59 से सोमवार प्रातः सूर्योदय तक है। रवियोग प्रातः 8:59 से आरम्भ होगा। त्रिपुष्कर योग दिन 2:51 से सूर्योदय तक है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:30 से 9:08 तक, लाभ-अमृत 9:08 से 12:24 तक, शुभ 2:02 से 3:40 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:52, सूर्यास्त 6:56

मेष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए व्यावसायिव कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी।

वृष
नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

कर्क
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कन्या
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

तुला
महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

धनु
मनःस्थिति में सुधार होगा। मानसिक तनाव दूर होगा। मन का भय समाप्त होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। विरोधी कमजोर पढ़ेंगे।

मकर
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात मनःस्थिति में सुधार होगा। मानसिक तनाव दूर होगा।

कुंभ
अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा।

मीन
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।